



उमंग जौली सरीन

चिरौरी

कल रात से बूढ़ी अम्मा के गले में खरखराहट हो रही थी। आज तड़के से बदन भी दर्द से टूटने लगा। खाँसी भी रह रह उठ रही थी। यूँ लगे था कलेजा बाहर आ पड़ेगा खाँसते खाँसते। मुँह दबा कर धीरे धीरे खाँस रही थी, बेटा बहु अभी सो रहे थे, जग गये तो बहु देर तक झुंझलायेगी।

खड़की के पर्दे से सुबह की नर्म धूप कमरे में झांकने लगी थी। दिन जब पूरा निकल आया तो रसोई में खटर पटर होने लगी। अम्मा को चाय की हुड़क लग रही थी। थोड़ी देर में बहु चाय बना कर लाई तो जान बूझ कर थोड़ा ज़ोर से खाँसने लगी अम्मा।

सोचा खाँसते देख बहु हाल पूछेगी,, पर वो तो चाय का गिलास मेज पर रख फ़ौरन ही बाहर निकल गई।

इतवार का दिन था तो बेटा तो अभी सुस्ता ही रहा था। अम्मा उसे सुनाने को थोड़ा और जोर से खाँसी तो बेटे ने कमरे से ही आवाज़ लगाई, "क्या हुआ अम्मा, ठीक हो न?"

अम्मा के मुँह खोलने से पहले ही बहु बोल पड़ी, "अरे कुछ नहीं जी, ज़रा खाँसी हो गई है अम्मा जी को। कितनी बार तो मने की है अम्मा को, अचार चटनी मत खाओ, ठंडा पानी मत पियो पर अम्मा हैं कि समझतीं ही नहीं।"

बेटे ने तुरंत समझदार पत्नी की हाँ में हाँ मिलाई, "क्यूँ बचपना करती हो अम्मा। इतना चटोरापन अच्छा नहीं तुम्हारे लिये। ठीक ही तो कह रही हैं प्रेमा, कर ली न तबियत खराब।"

अम्मा को अपराध बोध हो आया। बुढ़ापे में क्या सचमुच ज्यादा ही चटोरी हो गई है मेरी जिह्वा? अपने ऊपर शर्म आ रही थी।

हालांकि वो जानती थी ये बदलते मौसम का असर है। बढ़ती उम्र पर हर मौसम की मार रहती है। पर बच्चों को क्या ही बोलें?

अब तक बदन बुखार से तपने लगा था, चाय पी कर अम्मा आँख बंद कर लेट गई।

थोड़ी देर में प्रेमा नाश्ता दे गई। परांठा और भिंडी की सब्जी। भिंडी तो जरा न भावे थी उसे पर इतने काम में बहु सबकी पसंद का खाना तो नहीं बना सकती ना। बेटा और बच्चे तो अलग अलग फरमाईश किस किस की देखे, को समझा लिया।

अभी खा लूंगी" अम्मा भिंडी देख कर भूख "ठीक है" बस इतना गई, और भी तो उसे। बेटा अभी तक आया था। सुस्ती में बुखार की खुमारी में सिर सहला रहा है, बिन्नी, ले देख गर्म तैरे लिए, बहुत भावे को।" उनकी माँ बुलाती थी।

"ऊँ हूँ मैं नहीं खाने खाती मैं", अम्मा ने



करते रहते हैं। बहु यही सोच कर मन

ने लेटे लेटे कहा। मर गई थी।

कह कर बहु चली दसियों काम होते हैं अम्मा के पास न होगा शायद।

अम्मा को लगा कोई "बिन्नी ओ मेरी गर्म हलवा बनाया है है न मेरी बिन्नी बिन्नी कह कर

वाली, भिंडी नहीं करवट बदल ली।

"ना बिन्नी,, मैं तो मक्खन के साथ परांठा लाई हूँ। खाएंगी नहीं लाडो तो जल्दी चंगी कैसे होगी, मेरी सौं तुझे जो न खाए, तू न खाएंगी तो तेरी माँ भी खाली पेट सोएंगी आज, चल चल मुँह खोल,, अच्छा चंगी हो जाएंगी तो चाट पकौड़ी भी खिलाऊंगी।" चिरौरी कर रही थी माँ।

पर नखरे से हाथ हिलाने लगी बिन्नी। अचानक छन्न की आवाज़ हुई। टेबल पर रखा गिलास गिर गया था उनका हाथ लग कर। बूढ़ी अम्मा की आँख खुल गई। सपना टूट गया।

अम्मा धीरे धीरे उठ कर बैठ गई और प्लेट में रखे परांठे को भिंडी के साथ खाने लगी। बहु बच्चों से चिरौरी कर पूछ रही थी, "क्या स्पेशल खाओगे तुम लोग आज?"